Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

…ANBIR LIBRAR…
No 3048
JAMMOO

भजनमाला

بھجن مالا

बाबू राज कुमार देव नन्दन सिंह कृत

जिसमें

अजा विनाशिनि सर्वाधिङ्ग निवासिनि सृष्ट्युत्पत्ति स्थिति लयकारिणि श्री राज राजेश्वरी आद्या महारानी का जगदानन्द चरित्र और श्री पार्वत्यङ्गजा दुर्गा भगवती का सप्तशत्यन्तर्गत सगुण निर्गुण चरित्र सुन्दर भजन और रागों में श्रीयोगमायानुरागियों के आनन्द निमित्त वर्णित हैं

यही प्रथमबार

लखनऊ

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापी गई

फेब्रुअरी सन् १८८१ ईसवी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

संक्षेप दुर्गा यानी एक अध्याय का अर्थ एक श्लोक में किया गया है॥

अ०१ भानोर्बंशे समासीत्सुरथ इव सुरथः सानुभावेन
यस्या दैवं कार्य्यं विधातुं यदि भवति समा विष्णुला सा-
पि नित्या विख्यातोत्पत्तिरेषा जगति जलमये बोधना-
र्थाय शौरेर्हन्तुं करोद्भवौ यां विधिरनि शामस्तौत्क-
ल्यते सैव दुर्गा॥१॥

अ०२ दृष्ट्वा सैन्यं स्वकीयं विजितमथ हतं चाधिपत्यं
सुराणां गत्वा देवेशमी शौ निज चरितमिदं दानवैर्निर्जिता-
स्ते। व्याजह्रुश्चैतयोर्निःसृतमथ सुरहत्तेज आसीत्त्य-
देषा भूत्वा नारी तदा तत्त्वरितमसुरराशिरस्त याधानि भूयः

अ०३ सेनानी श्चिक्षुरोसौ विनिहतमखिलं सैन्य
मेतन्मदीयं दृत्यालोक्यार्थं देवीं निशातशरनिपातैः
समाच्छादयत्ताम्। छित्त्वा सापी षुणास्वेतदपि तमवधी
देवमेवासुरेशः आकारैर्यैस्तदृधं चागतस्तत्र महिषे शुणा
प्यघानीति देव्या॥३॥

अ०४ तस्मिन्नत्युग्रवीर्य्ये निधनमुपगते भूरि भीतिं
ददाने। तां देवीं तुष्टुवुस्ते निखिलसुरगणा हर्षिताः
पूर्णकामाः येभ्योऽभीष्टं च दत्त्वा वरमतुलमहो॰ हि

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

पूजितायाच भूयस्तस्याश्चोग्र प्रभावं कथमपि सकलं प्रागदत्कौतुकामान ॥४॥

श्र॰ ५ शुम्भश्चैवन्ति शुम्भस्सुर पतिमथ जित्वा तथान्यान दलीशः। आजन्हे यज्ञ भाक त्वं सकल मधि कृतं यत्पुरासीत्समन्तात। स्तुत्वा देवा वरं स्वं नरा पत्ति निकटेतुष्टुवु र्विष्णु मायाम्। चण्डो दूतश्च यस्यास्सदसिद नुज राजस्य कामञ्च चक्षे ॥५॥

श्र॰ ६ दूतः कोपेन देव्यास्तदुदित वचनं दानवेन्द्राय सम्यक्। आचख्यौ शीघ्र मे तत्र कुपित्त दितिजे प्रास्त दातं जगाद। केशा ना कृष्यता मानयमइति तदा कथ्य मानं तदुक्तिं। हूंकारेणैव चान्यं त्रिभुवनजननी भस्मसातञ्च कार ॥६॥

श्र॰ ७ आत्तश्री चण्ड मुण्डौ विहसित्त वदनां सिंह संस्थांच दृष्ट्वाग्रादातु प्रोद्यतौ चेद हह सपदि कोपेन भीमा विरूपा। काली भूता कराला त्रिभुवन जयिनी संवधे नैत्तयोस्सा। चामुण्डे तीह लोके पुनरपिच तदाना सतस्याबभूव ॥७॥

श्र॰ ८ छिन्ने सैन्ये समस्ते निधन मुपगते चण्ड मुण्डे सुरेशः आहूया पोय दैत्यान्समदि शादथ युद्ध यजाता स्तदाते। देवानां शक्तयस्तद्दि विध सकल रूपं तथा प्राप्य भूयाम। दैत्यानां रक्तबिन्दून यदनुज

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सम्हान समाजन्घुरेता: ॥८॥

अ०९ तन्माहात्म्यञ्च देव्या विदितभुवनिपालो सु-
हृः धातुर्भेच्छत विछि न्नेरक्तबीजे महदत्त कुपितः
शुंभएवन्ति शुंभः आयातोहन्तु मेनां मम भवदीत
युद्धं तयो भीमकारं। क्रुद्धाऽतीवाऽम्बिका सा हृदि-
निजगदया सम्विदार्य्याऽवधीत्तं ॥९॥

अ०१० भ्राता प्राणोपवरो मेहत इति नितरां किं
त्वयानैव युक्तं किं त्वं न्यासाम्बले नाति प्राथ वलम
वाप्या त्वयुद्धयुक्ती इत्युक्ते चैव शुंभे त्रिभुवनजननी
दर्पायित्यास्वतन्त्वा मेकची भूय संस्था अथ॰चत म-
वधीदेकता माप्य देवी ॥१०॥

अ०११ देव्या दैत्येप्रपूज्ये हनन मुपगते तुष्टुवः
सांगदेवाः। येभ्यो दत्तं वरं तत्सकल सुखकरं वां-
छितार्थं ददानम्। हर्षोत्फुल्लान नास्तेनिहतरिपु
गणाः स्वर्ग रक्षादि कारीम्। कालीं कात्यायनीं
तामवनिसलिलरूपाञ्च नारायणीम्वै॥ ११॥

अ० १२ स्तोत्रेणानेन नित्यं किल विमल मना-
स्तौति यो मामथ पन्ता। नो दारिद्र्यं कदाचिद्भयमपि
न्नपतो दस्युतो वान्यकेन। तन्माहात्म्यं मदीयं क-
थमपि पठतस्तस्य नैवास्ति किंचित्। देवी वाक्यंच
सर्वं तदिति विनयते सर्व्वलोकेषु पूवत्त ॥१२॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अ० १३ देवी माहात्म्यमेतत्सकलमभिहितं राज
बोधाय सम्यक्। दत्वा भीष्टं ततस्सावरमखिलमि-
दं वैपुण्य वर्य्यस्य राज्ञः एवं तस्यापि तत्र हत्त्वर सुरथ
महीपालकस्यापि नूनं। भक्त्या ताभ्यांच देवी किल
सम भवदन्तर्हिता स्तूयमाना ॥१३॥

संक्षेपदुर्गा सम्पूर्णाहुई

श्रीगणेशायनमः

अथ भजनमाला

श्लोक

नत्वा देवीं दशविधां गणेशार्कौ हरिं शिवम्। लो
कानां भुक्ति मुक्त्यर्थं क्रियते गीतमालिकाम् ॥१॥
ब्रह्मराज कुलोद्भूतो देवनन्दन संज्ञकः वासः शिव
ग्राम्येच सत्कुले कुलदीपकः ॥२॥ सीता यत्र स-
मुद्भूता तीरभुक्तदेशपावनः तत्र राज्यन्च ग्रामंच
बागवती यत्र विश्रुता ॥३॥ बागवत्या पूर्व दिग्भागे
क्रोशैकेच मनोहरे शिवेन निर्मिताचैषा सुन्दरी
चातिसुन्दरी ॥४॥ कृत्वाच पुरनिर्माणं शिवो पूर्वदि-
ग्भागतः देवकुल्यानिवासोभूत् लोकशिवहराऽस्मृतः ॥५॥

दोहा

ब्रह्मराज कुलभूत तन देवनंदन मम नाम।
पावनमिथिलादेश मंह स्थितिशिवहर गाम ॥१॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

शान्त लोग के हर्ष हित रचौं गीत की माल ॥ १ ॥
लीला पोभा शान्ति कर सुनत हरै अघजाल ॥ २ ॥

कवित्त

वन्दो श्री काली पद कमलोंते अधिके लाले जा कोज-
ग शान्त लोग देवी रूप ध्याये हैं। कहत गरोश गा-
णपत्य अरु शैव सदा शंकर अविनाशी सुख राशी
कहि गाये हैं। जाको ध्यान विष्णु करि ध्यावत सुरवै-
ष्णाव लहि दुर्ल्लभ सुख जाको ब्रह्मादिक सिहाये
हैं। कहत सौर सूर्य्य जाहि देव सुखत वेद जाको
पांच तन एक पंच देव ठहराये हैं ॥ १ ॥

छप्पै

पंच देवता ध्याय बहुरि इन के जो जन हैं निज निज
रूप न्हि चरण कंज जाके अलि मन हैं सब कहँ क-
रौं प्रणाम जासु अनुकंपा पाई लहि काली पद भ
क्ति जाहि सेवत सुख छाई पुत्र पौत्र यश विभव
जत जासु कृपा निज गृह भरौं तासु चरित शत अष्ट
पद विरचि गीति माला करौं ॥ १ ॥

अथ भजन

राग भैरो ताल जल्द तेताल्ला

जैजै काली कल्याणी तूं कमला सन सेवित माया
अलय अखिल ब्रह्माण्ड लोक सुख पल भीतर उपजाया १

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जबजब गाइ धरयो बसुधाको दुष्ट असुरन पाया
गाय सन्तसुर आरतबानी तुमको टेरि सुनाया ॥ २॥
तबतब वपु अनेक धारण करिहनि कै दनुज निकाया
सुखी करत सुर साधु बिप्र महि बिमल सुयश पुनि
छाया ॥ ३॥ एक बार बिनुजल महि ऊपर अतिहि
दुकाल सताया ताहि प्रभु सुर टेरि सुनायो तुरत
हि कीन्ह सहाया ॥ ४ ॥ प्रशाक रूप होइ प्रगट भई
जगस्वाद अमीरस पाया देव भुवन सत सम्वत लौंत
व प्रशाकं भरी कहाया ॥ ५॥

१ राग काफ़ी ताल तेताला

सकल पदारथ पायो तबते सुत बित नारि राज सुर
जन प्रभु बिबिध भाँति सुख छायो ॥ १॥ ज्ञान
मान बिद्या कविताई पद के वोध लखायो अन्तर
बाहिर हृत कलिकल्मष दुख के पुंजन घायो ॥ २॥
जबते शरण गत काली के जानि अभै पद आयो दे
वभुवन काली प्र सादतें अति आनन्द अघायो ॥ ३॥

२ राग झँझोरी ताल तेताला जल्द

तुअंघर के मैं सदा दास हूं पौं चजन्म फल पायकना
तज् १ असित नौमि तुल मास अहै निशि कर्क
लगन बुधबार जीव नखत अरु तनु पति प्राप्ति हैं
तनके सुख दातार मानन् २ पंचम गुरु तिसरो दिनपति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हैं मङ्गल बुध के साथ योग सुसिद्धि दूसरे कबिहैं
बहु धन सुख देहाथ माथ जू ३ अष्टम राहु मित्र
ग्रह सहशनि दोष कराा नहिं येहैं तव पद कमल
प्रसाद शंभु प्रिय सब सुन्दर सुख छैहैं मात जू ४।
अति हर्ष बिचार करत शुभ गुण सो सुखनन्दन फ-
लपाय चिरंजीवाशि गुरहे बिभवयुत सबजन को सुख
दाय मात जू ॥ ५ ॥

३ राग भैरवी ताल तेताला

जय जय जगदंब अम्ब सेवत सुर मुनि कदम्ब पा-
वत मन कात नाम लेत कालिका १ तारा पद भ-
जत जेहु भव को तरिजात तेहु बन्दों छिन्न मस्ता
पद शत्रु घालिका २ कमला को ध्यान धरत दा-
रिद को खानि हरत भरत भुवनेशी भव प्रणत पा-
लिका ३ बगला पद प्रीति करत दुष्टन बल बुद्धि
हरत धूमावति अरि उच्चाटि असुर घालिका ४
मातङ्गी को चरण ध्याय मूरुख मति विमल पाय
त्रिपुर सुन्दरि कहत जाय अघ निकालिका ५
भैरवी भयहारिणि मात देव सुवन शरण जात बिभु-
खन को करहु घात हित दयालिका ॥ ६ ॥

४ राग सोहनी ताल जत

कालीनाम भजो मन मूरुख क्यों आशा नर को करता

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब सुख भरनि हरनि दारिद दुख अस पद तजि क्यों
जग रहता १ वेद पुरान शास्त्र बहु पढ़ि पढ़ि तीरथ
करि करि श्रम सहता नाहक सकल ब्रह्म विद
भाषत जो काली पद मन जरता २ करि सत
संग भजो काली पद क्यों व्यथता पहिं परिजरता
कामधेनु चिन्तामणि सुरतरु काली सम न वि-
भव धरता ३ इन्ह सब के जब निकट जात नर
तब मांगे सब फल फरता बिन मांगे सब दां चा
रो फल कालि कृपा जन पूरन करता ४ दानि ठस
और नहिं दूसर कोउ काली तजि लखि परता सु
रनन्दन अस समुझि देव मुनि काली पद तजि
नहिं टरता ॥ ५ ॥

५ राग काफी ताल जल्द तेताला

आनन्दी के भजन बिना नर नाहक जन्म गंवा-
योरे आनन्दी के भजन करत प्रिय अखिलाखी
पद पायो रे १ आनन्दी आनन्द दायिनी वेद वि-
मल यश गायो रे सो तजि मूढ़ फिरत क्यों घर घर
फिर दुख भार चढ़ायो रे २ करि विश्वास भजो
आनन्दी जो गुरु ध्यान लखायो रे सहजहिं मिटै स-
कल दुख तेरो लहि सुख विभव अघायो रे ३
अष्ट सिद्धि नव निधि चारि फल आनन्दी करलायो रे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

रीनिजभक्तन्ह भवनभोतहैदेवमुनन्शुनिगायोरे ॥

६ रागपीलू ताल तेताला

भजिलेनर अज्ञानीसदा दुर्गा वरदानि आदिसोप्र कतिसब भुवनख्यातयस नाम हरत अघ अवगुण खानि १ जोनर भक्तिसहित नितउठि पूजत शारदकाल वार्षिक अनुमानि सकल कामना सोजन पावत साम वेद गुण विपुल वखानि-भ-२ यह भवजलधि पारजो चाहत सोउ सेवत कर्म बानी नारद शारदहरिचतुरानन सिद्धि लहे सेवत प्रिय पानी-भ-३ पुत्र पौत्र धन बढ़िनि अंबा जगदम्बाजियजानी प्रेम सहितसुरजनन्दन सेवत लेत अमर पदसुखजड़ प्रानी-भ-४

७ रागपीलूतालतेताला

आनन्दीके भजनकरोनर क्यों भ्रम संग लपटायोरे अम्बा को शरणागत देवी अरुव भ फन्द कटायोरे १ रहोसदा आनन्द मगनमेंजोहि नामहि सदायोरे जासु प्रभावतानउरउपजे अघके ओघ खदायोरे २ यादकरोजबगर्भबासमें सुधालुकामुलटायोरे तहं कोरदरच पठायोतेरो अवकस नाहि रटायोरे ३ आनन्दी पद छिनक नविसरो रहो आनन्द सपटायोरे देवमुकुन्द सुरपति पद पायो स्यामा न

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

जगनजटा घोरे ॥ ४ ॥

८ रागबारो झ्रीतालधीमा तेताला ॥

जै बाराही ब्रह्मवादिनी बागेश्वरि हरिमाया श्री भवानि भय को हरनि भीमा रिपु चामुकरनि जन हित भवजलधि तरनि केवल शम्भु जाया १ लक्ष्मी अरु उमा नाम ललिता कहि आठोयाम चारो फल निज भक्त धाम करत अमल काया २ काली जग पाली खल घाली रिपुहाली मातु पातु सब ठांई देवमुकुन्द शरण आया ॥ ३ ॥

९ राग कामोदी ताल झपताला

कोटिन अपराध मेरो क्षमा करो जगत मातु जास्ता भवानी तुही दयावन्त कृपावन्त माया वन्त सदा करुणा करि जानो निज दास दृदयानी १ जेते जग जीव जाल उपजत तुव अंग माल तेरोई प्रसाद यश गावत वाक बानी २ देवमुवन दास तेरो करुणा दृग कोर हेरो जानो निज चेरो मातु शंकरी मृडानी ॥ ३ ॥

१० रागईमनतालतेताला

अनुमन काली सब सुखदानी शुंभनिशुंभ हनन के बेरियां दुर्गा भालमांहि प्रगटानी १ तेज प्रताप कहां लगि कहिये यश गावत श्रुति बानी ।

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दुर्गा सरिस प्रभाव सकल जग बुध बिधि बिबुध
बखानी २ काली रूप सवाल जग जालहु उमार-
मा ब्रह्मानी सुरनन्दन को देहु भक्ति निज जन जा-
निये महरानी ॥३॥

१२ राग सोहनी ताल आड़ा तेताला

बरनौं प्रकृतिस्वरूप भवानी स्रष्टि प्रकाश जिनहिं तें
जाई प्रकृति नाम ताते श्रुति गाई त्रिगुणा भई तन
तीनि बनाये बिधि हरि हर होये जग उपजाये परमा
तमा रूप जग जानी तिन्हके बाम अंग ठकुरानी १
अग्नि माहिं दाहक गुण जैसे पुरुष शरीर प्रकृति रह
तैसे ताते यही ब्रह्म मय देखैं थिर जंगम सम करि
अवरेखै करौं स्रष्टि जब मन निज आनी रचै पंच
रूप प्रगटानी २ सक्ति भुक्ति अरु मुक्तिहिं देनी
परम धाम को नाम निसेनी सब जग ख्यात प्रभूतता-
हिके को बरनौं गुण बिभव ताहि के देव सुवन को
निज जन जानी देहु भक्ति निज पद शिवरानी ॥३॥

१२ राग बिहाग ताल तेताला

गुण मतो यह भाई साईं काहू उर दरसाई १ जैसे
मेंहदी पात में लाली रंग न देत दिखाई बिनु रगरे
लाली नहिं पावै कोटिन करै उपाई २ पत्थर माहिं
अनल के बासा चकमक से चकराई करि बिचार (६)

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

निज मन में देखो सांचो भाव समाई ३ बिन काली पद प्रीति किये नर तन की त पनि नजाई देवभुवन सनकादि अभय पद पायो भक्ति सहाई ॥४॥

१३ राग विहाग ताल झप ताला

जयति जयति जगत जननि पंचदेव रूपा वैष्णव जन विष्णु बदल सेवत फल चारि लहत कहत श्रुति नेति नेति जासु गुण अनूपा १ सौर कहत सूर्य्यदेव देवन पति गति अभेव सेवत पद कमल जासु मेटत भवधूप शंकर करि शैव सदा सेवत सब सम्पदा लेत मन मान तरत जगत जाल कूपा २ शाक्त जन भक्ति ध्याय अर्थ धर्म काम पाय रहत संतत मन अघाय अन्त मुक्ति रूपा देवभुवन करत ध्यान गणपति गणेश मान जाके नाम भय विशाल रहत विघ्न लूपा ॥३॥

१४ राग ईमन ध्रुपद ताल चौताला

कालिका पद लाल लाल कर तल युग लाल लाल छटे ध्याये जगत जाल गले शोभे हीरा लाल हृदय बीच मुंडमाल भाल लाल चंद्रिका के किरणलाल १ कर पद नख विमल लाल मुद्रि कन्ह की जोति लाल पायल दुति लाल कहे सुर भुवन देरि जो नरइन छबि को हेरि ताको नु करत निहाल सदा काली सुजन पाल२

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

१५ राग बिहागड़ा ताल एक ताला

जयति जयति जगत जननि कालिका भवानी धर-
णि भार हरण हेत प्रगटे ब्रजपति निकेत कृष्ण रूप
अति अनूप तीनि लोक जानी १ जब जब जग असु
रत काली तन बिबिधि धरत हरत भूमि भार यातु
धान मान भानी २ सोइ सुचरित जगत गाये अथ
मो गति बिसल पाये तीनि ताप छूट जाय श्रवण प-
रत प्राणी ३ देव सुवन हर्ष पूरि सेवत पद कमल धूरि
दीन्हो सुख भूरि मातु सेवक प्रिय जानी ॥४॥

१६ राग प्रबन्ध ताल सुर फाकता ॥

जय जय श्री मंगल चंडि को प्रकृति वदनते प्रगट भ-
ई तन कलि कलमख हि बिखंडी को १ सृष्टि माह
मंगल तन हेरी क्रोध रूप जग लय के बेरी ताते मंगल
चरित नास भौ जन यम त्रास बिहंडी को २ जग म-
व तिय मंगल दिन जानी पूजहिं तुमहिं काय मन
वानी पुत्र पौत्र धन बिभव लहत नर सुख नन्दन सुख
मंडी को ॥३॥

१७ राग भैरवी सिन्ध ताल तेताला

मेरो मन काली कल न बिसारो काली कमलापति पद
देनी अघहरणि कैलाश निसेनी जो जन काली प्रारण
निहारो ताको काली करत सुखारो १ तारा भव समुद्र

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तें तारैं छिनमस्ता अरि वृन्द संहारैं कमला जन घर
विभव भरतुहैं भुवनेश्वरि सुख देत अपारो २ बग-
ला अरि अस्तंभनकारिणि भैरवि भक्त जनन्ह भय
हारिणि धूम्रावति रिपु गण उच्चाटदे मातङ्गी अघ जा-
ल बिदारो ३ त्रिपुर सुन्दरी चरण मनाय तीनि का-
लके ताप न पाये जो मा दश पद हृदय धरत जन ल-
हत कवित गति मति सुखसारो ४ यह दश विद्या
नाम उदारो जो नर हृदय कमल में धारो ताको यम
के त्रास छूटि गये सुरनन्दन श्रुति टेरि पुकारो॥५॥

१८ राग पुरवी रेखता ताल तेताला

भजन करु कालि पद चोर वे भुलो मति मूढ़ नर
बौरे १ जगत के सकल सुख झूठे कबहुं नहिं जा-
हिंगे जौरे २ सदा मन ध्यान में राखो फिरो मति मो-
ह फन्दौरे ३ कहे सुर सुवन दुख तेरे हरैंगे कालिका तोरे ४

१९ राग बिलावल ताल एकताला

जपि जपि यति योगी वृन्द विहरत तजि कोटि फंद
जागि जागि यामिनि जुरजा सुनाम काली १ पावन
वर भुक्ति मुक्ति आवत नहिं पल बिमुक्ति वन्दित पद
देवन ते विविध भाग्य भाली २ बरणत मुनि वरदि-
नेश शारदा सुरेश शेष के श गौरीश जाहि गु-
णगण यश जाली ३ ताके पदकंज बीच बिलसत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नित बिनय युक्त देव सुवन चित्त चाहि चंचरीक प्राली ४

२० राग भैरवी सिन्ध ताल तेताला

करु रे मन मधुप सवेरा काली पद कंज मेंडेरा १ बार बार सम भावन भानो निशि दिन करहु बसेरा २ शिव सनकादि आदि सुर सेवत पावत सिद्धि घनेरा ३ उत्तर कौन करोगे पांवर करिहैं जब यम टेरा ४ देव सुवन बरवच प्रमाण सुनु इन्द्रिन देहु तेरा ॥ ५ ॥

२१ राग खंमाच ताल झुमरा

श्री रुद्राणी ब्रह्माणी तू भुवनेश्वरी जैजै श्यामा तू मातङ्गी वाराही तू धूमावति गुण धामा १ बगलामुखी लक्षिन छिन्नमस्ता दुर्गा तारा नामा काली कालिक ल्मष को नाशनि त्रिपुरसुन्दरी भामा २ दश विद्या के नाम लेत नर लहत तुरत विश्रामा देव सुवन आनन्द मगन मन गावत गुण अनुपामा ॥ ३ ॥

२२ राग देश ताल रूपक

भजु मन कालिका शुभ दानि कंज लोचन ताप मोचन भक्त वत्सल वानि १ जासु गुण कर श्रवण अनुछन करत अघ को हानि नाम बारक कहत प्रिय सो होत मंगल खानि २ भूमि जब जब भार पाये देव द्विज दुख जानि विविधि तनु धरि मारि दुष्टनि रा खनी श्रुति कानि ३ होत सुर धुर योग नर सब ध्यान

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हियमें आनि देवसुतनव शारदा आयद्धवहु शिव
कीरानि ॥४॥

२३ राग झंझोटी ताल धीमातेताला

जयजयजगजननि दयानी जवजव गाढ़ परे सन्त
नपर तवतव धरी तन अमिल भवानी १
मत्स रूप धूमावति जानो बगला मुखीकूर्म सु
तिजानी शूकर रूप धरे मातङ्गी छिन मस्ता
नरसिंह बरवानी २ त्रिपुर सुन्दरी परसराम है
सहस्रार्जुन दलमानी भुवनेश्वरी वामन तन कीन्हो
लक्ष्मी बौद्ध रूप अनुमानी ३ दुर्गा कल्की
राम तन तारा भैरवी हलधर आनी पूरण ब्रह्म
कृष्ण काली कहि देवसुवन शुभमंगलदानी ॥४॥

२४ राग ईमन धुपद ताल चौताला

शारद प्रसाद होत बुद्धि विद्या विनय ज्ञान ध्यान
अक्षर शुद्ध बानी उक्ति युक्ति मंथत स्वर राग ता
ल तान श्रुति ठरानि सुरनि नाद रस सानी १ शुद्ध
शालंक संकीरन शुद्ध विकृत नयन बिरस अस्था
ई सचाई हों कछु न जानी २ होयके सुबुद्धि भेद स
बकोल खायसदय दीजे शुरसुवन थाये तोहि वाक बानी ३

२५ राग लौम भा झोटी ताल ऐक ताला

जगतजलधि तरता तरिता भक्तिजाके वेद बखानै

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कारण धार नाम रघु प्रेम जोरनाको १ खैंचन वार ध्यान तोर संमुख बाबु छापा कोर जगत जननि ऐसो नजि जाउ पूरण काको २ सप्तदीप नवकुं खंड रह्यो फैल यश अखंड प्रांभु प्रेम रटत सदा सुख अपायाको ३ निद्धि नव सिद्धि अष्ठ पाये देवसुवन अति अघाय सकललोक पूज्य पद बिपायो दिन याको ॥४॥

२६ रागकाफ़ीतालतेताला

पद पवित्र काली को सेवत पाय पद्दार न पात भलेहो अगम अपार अमार जगत सुख सण भंगुर लखि परत पलेहो १ होत भक्तिश्री काली के जावस अणिमादिक सुधलेहो शिव ब्रह्मा सनकादिक नारद प्रेम मयी सिद्धि रहि कुघलेहो २ अविगति की गति लखिन सके कोइ तातें नर जड़ जातहलेहो देवसुवन सतसंग करे जबतब यह महिमा लखि अचलेहो ॥३॥

२७ रागदेशतालधीमातेताला

हे काली करुणामय अम्बा जगदम्बा मम अर्ज सुनो जू मति हमार तव गुण अधारकरि रहै सदा दिन रैन तुनो जू १ गुरु काली बिज्ञान कालि अरु ध्यान कालिका हृदय गुणो जू योग कालि अरु

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कर्मकालि सुख भोग कालि यशु बिमल चुनो जू २
धुनि कालि अरु मुक्ति कालि काहि नाम कालि
अघ पुंज धुनो जू काल गान काली मान काली
सुखभुवन श्रावा काली जपि जावो दुख पावो न पुनो जू ॥३॥

२८ राग सोहनी ताल धीमा तेताला ॥

देखो हो रे अद्भुत आनन्द छाय रह्यो रे कतहूं नृत्य
कहुं गावत गुनिजन कहूं याचक धन पाइ रह्यो रे १
कहुं द्विज गण गान्हो होम करतु हैं महँ महँ महँ महँ
होत महा रे कहुं बलि होत चलत असि छप छप
शोणित सरि सम जात बह्यो रे २ कहुं कहुं फिरत
भक्त मन उमगे जै जै जै धुनि टेरि रह्यो रे देवभुवन या
ओनेहि अवसर भक्ति सकल सुख खानि रह्यो रे ॥३॥

२९ होरी राग बहार ताल जत

काली जू खेलन होरी भुवनेश्वरी बगला धूमावति
मातङ्गी संग जोरी उमा रमा तारा सावित्री सचीस
हित सुर गोरी सकल मिलि भईं एक ओरी १ एक
वर शंभु सकल सुर सुरपति विष्णु विरंचि लयो री
खेलन रंग बिबिध उपजावत सो छवि कहि न परो री
भक्त सुख खेलन होरी २ बाजत चंग मृदंग बांसुरी
झाल झांझ डफ कोरी उड़त अबीर लाल बादल
भा कछु नहिं जान लखो री लाल चहुं ओर भयो री ३

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देवभुवन सामा होरी के गोप ढुं कहि न सकोरी
मैं केहि भांति एक रसना तें ताको बरनि निहोरी
भक्ति बर मांगि लयोरी ।। ५ ।।

२० होरी राग सिंदूरा ताल जत

कालीजू के दरबार होरी धूम मची उड़त गुलाल
अबीर कुंकुमा के पूर भरि पिचकार १ बाजत ता-
ल मृदंग चंग बहु मुरली बीणा सितार धरि धरि देह
राग रागिणी युत जुरे तान श्रुति चारि २ रंभा अरु
तिलोत्तमा उरवशी जुरे सहित शृंगार ये सब नाक
नटी जहं नाचत लावत भाव अपार ३ जो सुख को
तरसत ब्रह्मादिक सो सुख को बहिधार देवभुवन
तेहि अवसर पाँचै लहे भक्ति निधि सार ।।४।।

२१ राग बहार ताल जत

नयना लागि रही श्री दरशन के नव पाय खोजत खो-
जत उमरि बीति गो तीरथ तीरथ नाये १ ब्रत पूजा
उपवास विविध विधि करि करि श्रमन अघाय रजक
श्वान से डोलत घर घर कबहुं नहीं सचु पाये २ जब
सतसंग संग मन लाग्यो नाम नेह विरमाये देवभुव
न सहज हिं उर अंतर दरश दियो जगमाये ।। ३ ।।

२२ राग बहार ताल जत

काली मंदप के द्वार के पार रंग भेर बाजत ताल मृदंग

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

झांझ डफ़ अरु मंजीर सितार होरी अकथ को १
उड़त अबीर लाल चहुं दिशि भए सूझत बार न पार
होत कुलाहल भारी आंगन में कौतुक देखनवार
होरी लखत खरे खरे नाना भांति सुगन्ध चलत हैं
खान पान बहु बार देव सुवन तहां मांगि लियो अ
कालि भक्ति सुखसार जाहि निति अमरअरे ३

३३ रागकाफ़ीताल जंत

काली रचि रूप बनाई मुंड माल गल अवराति
कुंडल झलकनि केशरमाई मनहु नील गिरि
शिखर भानु लखि कंजावलि छबि छाई सु-
ठ वरणि नहिं जाई १ भाल अर्ध बर तिलक
निशाकर मुकुत शिर पहिराई मनहु राहु भय
भाजि भजत विधु चरण शरण पहं आई तिन्हे
शिर लीन्ह चढ़ाई २ साज सजी सब योगि नि
गण मिलि भव मंगल गुण गाई केशर अबिर रं-
ग भरि भर कर लै पिचुकी छहराई जलद जनु
भूमि झरि लाई ३ बाजत बीन लीन सुर रुद्र धु-
नि सिरदंगनि समताई देव सुवन सुनि दरस हेतु
सब देव देविन नभ छाई सुमन हरषित बरषाई ॥४॥

३४ राग होरी काफ़ी ताल जत ॥

होरी रंग रची जग तारा नु तार निहारी त्रिपुरा आदि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

ग्रन्ति सब सखि मिली बन्दनी समर लली नाचैं संग मची १ अणिमादिक सब सिद्धि सराहत क मला करै सुरमानगावै ताल जची २ अविरमयी सुरनदी प्रवाह मुनि ललना मनो पुनिकाल मंजे कीचमची देव सुवन जाकी नाम तारिणी रटै रुचिराणि सोहै मोक बची ॥४॥

३५ राग बिहाग ताल आंड़ा तेताला

जयजय वचन देवता वानी प्रणात सुमतिदा सुखद सिद्दिदा नारायणी कीयानी १ तुम्हरे चरण कमल रज सेवत नारदादि मुनि ज्ञानी सनकादिक ब्रह्मादिक ध्यावत व्यास देव बिज्ञानी २ मूक होत बाचाल मानु नवलहि प्रद जब प्रानी सुखंदनशारद करुणा मयो प्रकृति दूसरी जानी ॥३॥

३६ रागविहागताल आड़ातेताला

जय जय सावित्री श्रुतिमाता छन्दो मई सर्ब दुख हरणी यंत्र सुमंत्र तंत्र को दाता १ महिदेवन्हि के जाति रूपजो जप रूपा जप चाता तपसिद्धि ब्रह्म नेमको दायिनि विद्या जलधि बुद्धि को धाता २ विधि के विधा शील गुण पूरण ध्यान हरत अघ ब्राता देवसुवन को देहु अभय वर होइ सुयश जग ख्याता ॥३॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

३७ राग माल कौस ताल एक ताला

तन मन धन वारों चरण कमल पद्देरो जेहि ध्या
वत ब्रह्मा शिव शारद शेष सकल सुर खेरो १
हे काली कमलापति माया अष्ट सिद्धि तव चेरो
नव निधि लहत बिनहि श्रम जग में जो जन तव
पद हेरो २ हे जननी जन के दुखहरनी सुनिय
बिनय यक मेरो देवसुवन के हरहु सकल दुख
करि के हिय में डेरो॥ ३॥

३८ राग बिहागड़ा ताल झपताला

जय जय जग जननि देवि राधा सुर चरण सेवि सु-
द्धि बुद्धि वृद्धिदा त्रिलोक स्वामिनी १ सर्व श-
क्ति में प्रधान निगम करत विभव गान पावत
जन ज्ञान ध्यान अमित नामिनी २ बृंदाबन बा
स करनि संतन रिपु त्राण हरनि सकल भुवन च-
रित भरनि कृष्ण कामिनी ३ कृष्ण मन मान-
स मराल कृष्ण रस बिमल ताल कृष्ण प्रीति
पाल मालि सुभग भामिनी ४ कुल सहित स
दा नाम देवसुवन अष्ट याम पावत मन काम
लेत दिवस यामिनी ॥ ५॥

३९ राग बिहागड़ा ताल जल्द तेताला

भजु मन राधा राधा राधा राधा नाम सकल जग सार के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कारत यम के बाधा १ आदि शक्ति दशिरमाङ्ग भक्तपरवृत्त कृष्ण तन आधा २ लक्ष्मी है वृष भानु लाड़िली सब गोपियन में साधा ३ वृंदावन के रास थली में पूज्यो नव पद कांधा सुरनन्दन को भक्ति देहु निज अखिल अमर पद दाधा ॥ ५ ॥

४० राग विहाग ताल झपताला

जयति जयति जनक नंदिनि राम रंजनी शारद चंद मुख अमन्द ध्यान करत हरत द्वंद मेटत यम फंद मातु जैन खंजनी १ कुण्डल शोभित कपोल चूड़ामणि अति अमोल कोकिल रव मधुर बोल सरयु मंजनी २ निरखत छवि मातु तेरि हरषत हिय चित्त मेरि बरसात गुण रूप हेरि बुद्धि मंजनी ३ देहु मातु भक्ति दान दानी नहिं तुम समान याचों नहिं देव आन भक्ति रंजनी ४ देव सुवन हर्ष सहित गावत नित नव चरित्र पावत भक्ति धन पवित्र शत्रु गंजनी ॥ ५ ॥

४१ राग इमन ताल तेताला

हे सीते मिथिलेश लाड़िली त्रिभुवन पति रघुवर की प्यारी वेद पुराण संत गुण गावत महिमा अगम अपार तिहारी १ सनकादिक ब्रह्मादिक ध्यावत सहित शिवा नित जपत पुरारी गणपति जन पति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

धनपति दिनपति सकल पूज्य पद सदा तुम्हारी २ मति न मोहिं तव अस्तुति बनावों गावों सुनावों विनय अघहारी देवसुवन को हरहु सकल दुख देहु भक्ति निज सब सुख कारी ॥ ३ ॥

४२ राग श्याम कल्याण ताल धीमा तेताला ॥

जपो सदा काली को नाम मन को होवै काम दरसकिये ते होत मन आनन्द सुख पावत गुण गावत शुभ धाम १ परसत पग अघ भाजि जात लहत मन काम आठो याम २ यह जिय जान माने शिवगुरु को याते सुरसुवन मन होत है विश्राम ॥ ३ ॥

४३ राग ध्रुपद श्याम कल्याण ताल चौताला ॥

दुर्गा को पद सेवो जाते मिले अर्थ धर्म काम जाको प्रबल प्रताप तेज धर्म को पताको फहरात मोक्षपद पावत लेत नाम १ कनक दण्ड चमर छत्र वैकुण्ठ ते सरस सुन्दर सुखधाम २ रतन सिंहासन पै बिराजित बोलत हैं बंब्रूहि देव सुवन मंगल स्वरूपिणी शिव बाम ॥ ३ ॥

४४ राग खंभाच ताल चौताला

करौं कौन अस्तुति भानु तेरो अल्प बुद्धि मेरो तव गुण अपार सहस बदन रटत रहत निशि दिन नहिं लहत अन्त गावत नहिं मिलत पार अति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिस्तार १ जेते जगजीव तेरो मंत्र जपत सिद्धि करत जाको जस प्रेम ताहि देत फल बहु प्रकार २ सब को प्रति पाल करति देवसुवन दास जानि अभय करत प्रास्त्र भनत त्रिपुरार ॥ ३ ॥

४५ राग सोहनी ताल तेताला

कृष्ण बरण जो काली ध्यावै ताको अनन्त दुख दूरि जात तत क्षण १ मन वच कर्म चरणाधार उर सोई होत धनधन्न २ ज्ञान ध्यान चौसठ विद्या कला लहत बढ़त सुयश चारु होत सुभग तन ३ देवसुवन को यह शिक्षा मानि लेहु भक्ति-ग होकरि अति प्राप्त मग मन ॥ ४ ॥

४६ राग काफी ताल तेताला

काम क्रोध तजि पद काली को भजो जाहि ते जग निस्तार करत समुझायो समुझत नाहीं ऐ सो मन अविचार १ एक एक जगदम्ब अम्ब दूजो अवलम्ब नाहिं वेतो अधम अघी अपार २ कहत देवसुवन तव किंकर याके तारे नाम तिहार ॥ ३ ॥

४७ राग बिहाग ताल आड़ा तेताला

मन सेरो कालिहि न बिसारो सब दिन काली कल्प कल्पान्तर करति सदा जन के प्रतिपारो १ सत युग में नरहरि शरीर धरि जन प्रहलाद उबारो

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

हिरणाकशिपु हति जगत बिमल यश श्री काली
बिस्तारो २ बलि छलि राज दियो सुरपति को क-
रि बामन अवतारो त्रेता परशुराम बपु धरिके
सहस्रार्जुन संहारो ३ त्रेतेऽरु रामचंद्र बपु धरि के
हति दश मुख कुल सारो द्वापर में बलदेव रूप
है द्विबिद नाम कपि मारो ४ काली कृष्ण रूप
धरि जग में अति लीला बिस्तारो देवभुवन सब
दिन करुणामयि सज्जन कर रखवारो ॥ ५ ॥

४८ राग गौरी छन्द लावनी ताल रेखता

हे काली कश्मीर बासिनी तू कामाख्या रानी ज्वा-
लामुखी जगत की जननी अघहननी भवबानी १
ब्रह्ममई तू वाग्वादिनी बाराही ब्रह्मानी तू भवा-
नी बिमला कमला मनि महिमा वेद न जानी २
तेरोइ सुमिरन तेरोइ धारन तेरोइ ध्यान भवानी
देव भुवन मन रहै दिवस निशि देहु है बरदानी ॥ ३ ॥

४९ राग भैरव ताल जल्द तेताला

जै काली कल्याण दायिनी श्री कमला पति माया
लिंगधारिणि कार्मुकी कुमुदा विशालाक्षि सुर
जाया १ त्रिभुव कामना पूरणि ललिता गोमति
गौरि जयंती रंभा कीर्ति मती विश्वे पुवरि रुद्राणी
खलहंत्री २ काम चारिणी भद्र कर्णी का मंदाकया

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भवानी मदोत्कटा पुरुहूता कुमारी कपिला बिमलाबानी ३ अम्बुप्रिया सन्मार्गदायिनी मुकुटेपुर्वारिमहामाया देवमुवन के हरहु सकल दुखहतिके मातु निकाया ॥ ४ ॥

५॰ राग भांकरा ताल झपताला

जयजय जग प्रगट करणि सज्जनजन चापहरणि भक्तिजननिह अघटदरणि विंध्यवासिनी १ हे व्रजेश नन्दिनी समस्त लोक बन्दिनी त्रिलोक शोकहारिणि तु मातु नाशिनी २ सेवत तव पद सुरेश ब्रह्मा मुनिगण दिनेश पायो सर्वसिद्धि हृदय यश प्रकाशिनी ३ देवमुवन बिमल पाय सेवहि तवपद अघाय दीजे बरदान मातु खङ्ग पाशिनी। ४

५॰ १ राग रेषता ताल जल्द तेताला।

गिरितनया पद भजन करो मन तजि के छल चतुराईरे जाकी कृपा पाय जल जासन धुनि विधि जगउपजाईरे १ जाके शक्ति करत हरिरक्षा अंत रुद्रबिनसाईरे जिन्ह के शक्ति पाइ नर नर पति पावत बिपुल बड़ाईरे २ जिनकी कृपा पंगु गिरि लांघत अंधहि जगदरशाईरे देवमुवन जाके प्रसादते सकल कामसिधि पाईरे ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

५२ राग खंभाच ताल धीमा तेताला

बरणौं तीर्थ रूपिणी देवी नाम लेत अघ ओघ नशानी सह्याद्री पर महालक्ष्मी माता पुरेणुका बखानी १ तुलजापुर प्रात पूतंग तीर्थ वर ज्वाला मुखी विराज भवानी चीन देश में नीलसरस्वनी शाकंभरि थल सब सुखदानी २ नील शैल पर नीलाम्बा थल वैद्यनाथ में बगलाजानी कांची पुर में भीमादेवी मणि द्वीप भुवनेश्वरि रानी ३ मंची पुर कामख्या कामरू योगेश्वरि एकांबर मानी ये सब श्रेष्ठ तीर्थ सुरजन्दन दरसन मात्र करत अघहानी ॥४॥

५३ राग बिहाग ताल आड़ा तेताला

काली मुख निरखत लज्जित चन्द जाके पद ब्रह्मादिक ध्यावत नारद सनक सनन्द १ शेस महेश गणेश आदि कवि पूजत तुमहि अखंड पावन यश नित वेद बखानत व्यापि रहो ब्रह्मंड २ देहु मात निज दास जानि के याचत भक्ति अभंग देव सुवन के हरहु सकल दुख भरहु सुभद सुख अंग ३

५४ राग झंझोटी ताल जल्द तेताला

रक्तबीज सों कहत भवानी सुनहु मंद मति प्रथम मोहि पै पठयो दूत अधम अघखानी १ ताहि कहो

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मैं जाऊं शुंभ ढिग कहहुं मोर परतिज्ञा बानी तीनि लोक पर रूप जाहि के कबहुं न ग्रहणकरौं अभिमानी २ जो रण जीति विवाहै विधिवत होइ रहौं ताकी पटरानी देवसुवन मम अस प्रमाण सुनु तासु दूत तुम हूं अज्ञानी ॥ ३ ॥

५५ राग झंझोटी ताल जल्द तेताला

रक्तबीन सुनि कर्कश बानी दुर्गा क्रोध भयो उर अंतर छाड़न लागु बाण अभिमानी १ छण महं तासु बाण खंडन करि जगदंबिका भक्त सुख दानी मारयो बाण असुर उर तीक्षण रथ पर मूर्छि परा अज्ञानी २ लखि धाये सब असुर सेन शर वर्षन लाग मेघ जिमि पानी पुनि शर छाड़ि काटि अरि बाणहि निज शर मारि असुरदल भानी ३ रक्त बीज वध करि रण भीतर सुखी कियो सुरसंत भवानी देवसुवन को करहु सुखी अब हति के सकल शत्रु कल्यानी ॥ ४ ॥

५६ राग मलार ताल तेताला

श्री काली छबि निरखि हरष युत निशि दिन तरसत नयन हमारे योगी ब्रह्म सबै नहिं ध्यावैं सनकादिक [illegible] गावैं नारद शारद पोथा आदि सब कह [illegible] कोहौं ब्रह्मा रूप सकल जग जाये पालन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

विष्णुस्वरूप कहाये रुद्र रूप पुनि नाश करत तुम
नव गुण अगम पार नहिं पावे २ जिमि वर्षा सब
घांस उपजावत चंद्र शीत निज ताहि बढ़ावत सूर्य
जोति ते नाश करत तेहि निगुण रूप तुम सब से न्यो
रे ३ चारो वेद सदा गुण गावत गणपति आदि
सकल सुर ध्यावत करहु कृपा निज दास जानि के
देवसुवन मन तव पगु वारे ॥ ४ ॥

५७ राग मलार ताल तेताला

श्री काली छवि श्याम घटा लखि हरष प्रफुल्लि
त जन मन मोरवा गदामिनि दमक ध्यान दरशा
ये वर्षा अमिय बहु सुख छाये योगी जन मन
मुदित जाहि में मगन रहत निशि दिन तजि प्रा
रवा १ वह बरषा रितु जब उर आये कलि ग्रीषम
के ताप नशाये नाना गुण घांसि प्रगट होत हैं मि
टत अविद्या निशि जिमि भोरवा २ क्रोध लो
भ अरु मोह जवासा गलित भये सब एहि घन
चाशा देवसुवन के हिय नभ रहु छै असु सदा
काली घन जोरवा ॥ ३ ॥

५८ राग मलार ताल तेताला

श्यामा सखिन हिंडोल झुलावत सची आदि
आदि शक्ति सब देवन की मिलि गावत १ सुके

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मलार गुंड अरु सोरठ राग रंग उपजावत सघन कुंज घन घोर मोर पिक दादुर शब्द सुनावत २ अति विचित्र हिंडोल शाल लखि ब्रह्म सुखहि बिसरावत देवसुवन शोभा समूह लखि जयजगदंब मनावत ३

५९ राग मलार ताल तेताला

श्यामा झूलत सरस हिंडोले श्रावन सघन कुंज की शोभा त्रिविधि पवन जहां डोले १ घन गरजत रव करत पपीहा मोर जोर धुनि बोले दादुर कीर कपोत कोकिला सारस हंस अमोले २ कुसुम अनेक भांति बहु फूले अलि गुंजार करत कलोले देवसुवन श्यामा हिंडोल लखि विरथ होत अलोल ३

६० राग ईमन ताल चौताला

ओंकार प्रथम मान शक्ति में काली प्रधान रुद्र मान महादेव वेद मान ब्रह्मा सिद्धि में गणेश मान तेजन महं सूर्य मान निशा माहिं इन्दु मान नृत्य मान रंभा १ तीरथ प्रयाग मान ऋषिन में नारद सुजान गान में प्रवीन मान नदी मान गंगा नर में नरेश मान असुरन में बलि प्रधान साज मान बीणा कहत संत सज्जन संगा २ पुष्प मान पारिजात तरु में सुरद्रुम कहत दान मधि अन्न मान धर्म मान दया कहै सुरसुवन मान जिनने सब कला जान काली

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

कल्याणी मान जगत जननि माया ॥ ३॥

६१ राग भैरवी ताल तेताला

कमला बंदत हौं पद हृद शुद्ध स्वरूप विष्णु के मोहि-
नी विष्णु प्रिया सुख कन्द १ क्षमा शील युत मति
गंभीर अति पति गति सुरनि अमन्द भक्त भवन में
बिभव दायिनी गावत यश श्रुति छन्द २ लोभ मो-
ह मद क्रोध वर्जिता हरनि भ्रमन को फन्द करहु कृ-
पा मम हरहु सकल दुख याचत बर सुखनन्द ॥ ३॥

६२ राग काफी ताल तेताला

कमल पद सुमिरौं कल्याणी कमलासन को कृष्ण
प्रिया नारायिणि लक्ष्मी कमल पत्र तन भासनि-
को १ कमल मुखी कर कमल बिराजत कमल
कोश महं बासनि को २ कमल नेत्र पद बिमल
कमल से ध्यान करत अघ नाशनि को ३ कमचं-
द्र के हृदय चंद्र दुति देनवारे सुख राशनि को देवसु-
वन भनु सदा रैन दिन श्री वैकुण्ठ निवासनि को ॥ ३॥

६३ राग पूरबी ताल जल्द तेताला

भजु मन चरण कमल कमला के विष्णु लोक में म-
हा लक्ष्मी कहत नाम श्रुति जाको १ इन्द्र लोक में
स्वर्ग लक्ष्मी स्वाहा होम थल माहीं गृह लक्ष्मी गृह-
स्थ के घर में नाम जासु सुखदा वसुधा के २ जिन्ह

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

बिनु नर आदर नहिं पावत हित कुटुम्ब के माहीं देव
सुवन चितवत नाही पर पूजन करत सकल जगत ताको ३

६४ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

श्री देवी चरणारविन्द में मन मेरो अलि लागि रह्योरे
जो देवेशि जगत के कारण हिरण्यगर्भ के कारण
धारण गदा चक्र अरु शंख कंज कर सदा हृदय ह-
रि जागि रह्योरे १ ब्रह्म रूप जो सब जग जाया अंड
कटाह अनेक उपाया नाहि ब्रह्म के परस्वरूपेशा
जासु भक्ति सुभागि रह्योरे २ माहेश्वरी सुमहा भा
गवति महाउदय माहामाया मति देवसुवन को वही
महामति शरण भक्ति गुण पागि रह्योरे ॥३॥

६५ राग झंझोटी ताल आड़ा तेताला

जगत जननि शची हरि माया ब्रह्मा विष्णु महेश
सकल सुर सेवत तोहि अमित बल पाया १ करत
विधाता सृष्टि विविधिविधि पालत विष्णु सबहिं
कर दाया पुनि कल्पान्त माहिं शिव सहजहि कर
त नाश लहि शक्ति सहाया २ हे जननी जगदम्ब
अम्बिके देवसुवन तुव शरनहि आया करहु कृपा
मम हरहु सकल दुख करहु दया निधि भक्ति सहाया ३

६६ राग काफ़ी ताल तेताला

काम क्रोध मद लोभ छाड़ि के क्यों काली पद भजत न

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

नहीं रे कल समुझाइ तु समुझत नाहीं ऐसो जड़ अविचारगहीं रे १ ज्यों माता अपने शिशु सुत को नहिं अपराध गनत मनहीं रे त्यों तेरे अघ क्षमा करहिंगे कल्याणी करि कृपा सही रे २ सेवत चरण कमल सनकादिक ब्रह्मादिक सुरगण सबही रे देव सुवन अम्बा करुणामयि तुमहि देव नव निधि घरही रे।३।

६७ राग काफी ताल तेताला

योगी जन जाको ब्रह्म रूप करि लखत सदा वैष्णव विष्णुरूप करि ध्यावत कर लीन्हे गलजादि गदा १ शैव सदा शंकर करि ध्यावत कर त्रिशूल वाहन बरदा शाक्त शक्ति कहि ध्यावत जाको सिंह चढ़े नाशत विपदा २ सौर सूर्य्य कर ध्यान करत जेहि तन प्रकाशमय अलख सदा देव सुवन काली पांचो वपु ध्यान हरत यमराज फंदा ॥३॥

६८ राग काफी ताल जल्द तेताला

कालीनाम सदा नर मूरख रहत न क्यों रसना पर धारे कनक बरण मणि जटित अभूषण बसन छटा दामिनि दुति वारे १ नील जलद सम तन दुति कारी हृदय बिमल किन करत सदारे दुख दारिद सब भागि जाहिंगे नव निधि सिधि बस होत तुम्हारे २ अमित जन्म के पाप नशैहैं ह्वैहै आनन्द

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सब तव द्वारे देवसुवन सुत संपति बहु बिधि पायो काली कृपा निहारे ॥ ३ ॥

६९ राग झझौटी ताल तेताला

देवी द्वारे बाजत यंत्र पंच मन भायो पणव निप्रान भेरि सहनाई बीणा रबाब मृदंग सुहायो १ चंग उपंग हंग बहु बाजत नर अरु नारि जुड़ायो जगमग होत ज्योति मन्दिर में देवसुवन लखि होत अघायो ॥ २ ॥

७० राग भैरवी ताल नल्द तेताला

नव चरण कमल पर मन है भ्रमर लो भानो जैसे चंद्र चकोर १ जिमि चातक स्वाती के बुन्द से कमल भानु घन मोर २ अरु जिमि कुमुदिनि चाहति चंदहि चाहत चकई भोर ३ देवसुवन नव भक्ति चाहत दृढ़ देहु दया नीं हरि हग कोर ४

७१ राग काफी ताल तेताला

श्री गंगा पद ध्यान करो मन तन के दुरित नशाई विष्णु लोक से चली दयानी शंकर जटा समाई १ तहांते चारि धार है निसरीं चारो नाम सुहाई सीता चक्षु अलकनन्दा पुनि भद्रा सब सुखदाई २ सीता केसर गिरिवर होकर गंध मादनहि जाई पुनि भद्राश्वखंड पूरब है क्षीर सिंधुहि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

समाई ३ माल्यवान गिरि हो अति बेगहि केतुमाल महि छाई जो पश्चिम के जलधि माहिं मिलि चक्षु नाम श्रुति गाई ४ तिजो अलकनन्दा जेहि काहियत गिरि सुमेरु है धाई इषिता हिमगिरि होनाघ न वज गिरि हेमकूट मल लाई ५ तहां ते भरत खंड पावन करि सागर सिंधु नहाई जासु स्नान चलत पग प्रति नर अश्वमेध फल पाई ६ भद्रा श्रृंगवान गिरि वहै भद्राश्ववर्ष महं आई देवसुवन त्रैलोक पावनि उत्तर जलधि समाई ॥७॥

७२ राग काफ़ी ताल तेताला

श्री राधा पद पद्म ध्यान करु साम वेद जो लखायो है चम्पक स्वच्छ समान देह दुति शरद चंद मुख भायो है १ शरद कमल लोचन बिंबाधर अरु शोभा सुख छायो है नासिका कुंद घंटिका राजे तिदन्त पंक्ति दुति पायो है २ शुद्ध अग्नि अम्बर श्यामी तन प्रहसित वदन सुहायो है देवसुवन त्रैलोक स्वामिनी कृष्ण प्रिया यश गायो है ॥३॥

७३ राग भैरवी ताल तेताला

हे राधे वृषभानु नन्दनी कृष्ण प्रिया गुण खानि सुनो जू १ तुम्हहिं छाड़ि गति और न मोको राखे पूर्ण मम कृत न गुनो जू २ कबहुं न दान धर्म कछु कीन्हे

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

۳۸ بھجن مالا

नाहिं जप योग न ज्ञान सुजोन् ३ देवसुवन को य-
ही भरोसा नाम गाइ तव अघहि भुजोज् ॥४॥

७४ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

श्री राधा की श्रेष्ठ सहचरी सुरभी चरन मनावोरे प
रमेष्ठी लक्ष्मी स्वरूपिणी गोमाता गुन भायोरे १
अधिष्ठा त्रिदेवी गायों की गोशोभा गुन गायोरे अ-
ति पवित्र दा सब सुख देनी वेद टेरि के सुनायोरे २
घट अरु गाय भूमि स के माहीं अगिन अंबुहि सु
हायोरे गो वन्धन थल श्यालि ग्राम में सुरलन्दन
जो मुनायोरे ॥ ३ ॥

७५ राग विहाग ताल तेताली

सुरभी नाम सकल गो माता मोपर होहु प्रसन्न भ-
वानी १ एक समय सब जगत माहि जब गाय रही
न बयानी सब के छीर लीन्ह सुरभी हरि तब इन्द्रा-
दिक पूजा ठानी २ षोड्श भांति पूजि सुरगण मि-
लि अरु अनेक अस्तुती बखानी देवसुवन तब सक-
ल गाय थन मह नहि आई छीर प्रगटानी ॥ ३ ॥

७६ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

जैजै श्री मनसा देवी को जो कश्यप मानस से प्रग-
टी सकल सुरासुर सेवी को १ जो भगवती सदा निज
मन सें परब्रह्म ध्यावत सुता स्वरा में ताते नाम कहत

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE.

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

मनसा करि ब्रह्म वेद अधि देवी को २ जो नर मनसा॰
पद मन धारे छूटि जात दुख होत सुखारे देवसुवन स
रण मन न बिसारे चरण कमल हरिसेवी को ॥ ३॥

७७ राग नट

भजु मन कालिका शुभ नाम रटत जाहि सनका
दि हरि अज भये मंगल धाम २ सुरथ नृप अति स॰
मापिरिपुडर गयो बन तजि ग्राम सुमिरि जाको नाम
पावन लहे सब मन काम २ अखिल ब्रह्मंड कारण स
ब जग जननि अतनु अनाम अमित महिमा कहि
न सक श्रुति आदि सिंधि परिणाम २ रटत रसना
नाम काली लहत नर विश्राम देवनंदन शरण आ
ये द्रवहु शंकर वाम ॥४॥

७८ राग काफी ताल तेताला

मनसा होत प्रसन्न जाहि पर तासु सकल दुख छूटे १
श्वेत बरण चम्पक दुति दामिनि तनकी कांति लोने
छबि लूटे २ देवसुवन मनसा प्रसाद तें टूटे नेह जा॰
न पुनि जूटे ॥ ३॥

७९ राग काफी ताल तेताला

जो मंगल चंडी पद सेवत मंगल भवन होत नर सोई
सकल अमंगल मूल नसावत पावत सब सुख दुर्लभ
जोई १ जगत जननि जग मंगल करनी जिन्ह सरी अ

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अवर न कोई ताके सर्व कामना पूरण देवसुवन सु-
मिरन क्षण होई ॥ ४॥

८० राग खंभाच ताल तेताला

जगत सनाथो षष्ठी को जिहि सेवत सुख पावत नी-
के १ पुत्र पौत्र धन विविधि लहत नर पूरत सकल
कामना जीके २ देवसुवन षष्ठी प्रसन्न ते करत
हलाहल काम अमीके ॥ ३॥

८१ राग खंभाच ताल तेताला

स्वधा नाम उच्चारण ते नर होत पवित्र पुराण बखानी
स्वधा नाम जगदम्ब अम्ब के भक्ति करत है जो प्रानी १
सकल तीर्थ अस्नान लहत फल अश्वमेध फल
पावत ज्ञानी २ स्वधा स्वधा पुनि स्वधा बार त्रय जो
निज रसना आनी तर्पण आद बहुरि बलि के फल
देवसुवन पावत जग मानी ॥ ३॥

८२ राग ईमन ताल झपताला

जैजै आद्या भवानि जगत जननि विदित बानि भक्त
जनन्ह अभय दानि त्रिगुणेश्वरी १ जै ब्रजेन्द्र नन्दि-
नी अनन्त देव वन्दिनी प्रणत जनन्ह प्राण दानि
जै महेश्वरी २ तेरोइ पद ध्यान धरत तेरोइ गुणगान
करत हरत अघ समूह मात जै विधेश्वरी ३ तेरो पद द्व
रहता देवसुवन आये शरण दीजे निज भक्ति मातु जै ब्रजेश्वरी

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

८३ राग काफ़ी ताल तेताला जल्द क़व्वाली

बिनु काली पद भजन किये नरतन की नर निज जातक-
भौरे जा पद को सेवत ब्रह्मादिक सनकादिक मुनि नि-
कर सभी रे १ जासु प्रसाद अखिल अघ सपने कोउ त-
न ताप जात नहिं भौरे नाना बिधि सुख सम्पति छाव-
न देखु बिचारि जग बिदित अभौ रे २ काली कल्मष
नाशनि कलि में वेद पुराण कहत सबही रे देवसुवन
जो जपत रैन दिन तासु निकट दुख जात नहीं रे ॥३॥

८४ राग काफ़ी ताल तेताला जल्द

जो मन बसै कालिका के पद सो बांछित फल तत्क्षण
पावै अधम उधारनि नाम जपत सब जो सुमिरे अ-
घ ताप नशावै १ तुम उदार दानी सबही विधि वेद
पुराण संत सुर गावै देवसुवन को यह बर दीजै अ-
चल भक्ति तुव चरनन पावै ॥२॥

८५ राग काफ़ी ताल तेताला जल्द

श्री काली के नाम लिये जन छूटि जात भव बाधन से
मंगल मूल अमंगल हरनी नाम करनि यम शासन
से १ अमित अपार नाम की महिमा वेद कहत नहिं
स्वासन से ताको नहिं त्यागौ निज उर से डरो नहीं जग
अपमान से २ जो कछु मिलै अन्न जल लैके खाद्यौ
नव सुधा सम ने देवसुवन कालिहि समर्पि के

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

करो भोग निज ग्रासन से ॥३॥

८६ राग ईमन ताल जल्द तेताला

जगदंबा जग जननि भवानी कल्याणी पद कमल
भजो रे मधुकैटभ बधि करि दुख जग के नाना भांति
हि विभव सजो रे १ देवेशी विश्वेश्वरि विमला अ-
मल चरण लखि कमल लजो रे ताके ध्यान करो मन
मूरख अपर सकल सुर आशु तजो रे २ जो निज कर्म
अकर्म पाछिलो करि विचारि मन माहिं लजो रे सु-
रनन्दन काली करुणामयि निशवासर करि ध्यान भजो रे ३

८७ राग झिंझोटी ताल तेताला जल्द

मन मेरो काली पद जकरी आनन्दिन आनन्द दा-
यिनी छिपा ननजो हारिल निमि लकरी १ कबनि-
हुं काल दुकाल न ब्यापहि नहि यम गण पकरी
कबहुं न दुख दारिद जगदंबा पीसहि ताहि नाहिं
आपकरी २ रहत सदा आनन्द मगन मन धरत न
कबहुं मोह मय मकरी देवसुवन निशिबासर छिपा
छिपा रहो सदा काली पद पकरी ॥३॥

८८ राग बंगरीक ताल झपताला

जय जय जगदंब अम्ब जननि अमित दल कदंब दलनि
असुर कुल समस्त प्रभु भामिनी १ आदि प्रकृति
तू भवानि आदि प्रकृति श्रुति बखानि भक्ति मुक्ति

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दायिनी त्रिलोक स्वामिनी २ करुणा अर्यान् बिधावि सकल भुवन विभव दात्रि नपत नाम सदा देव दिवस यामिनी ३ तेरो पद ध्यान करत बिबिधि भांति पाप हरत टरत त्रिविधि ताप सुमिरि अमित नामिनी ४ देवसुवन दास तोर विनवो निज कृपा कोर मेटहु दुख द्वंद मोर ब्रह्म धामिनी ॥ ५॥

८९ राग काफी ताल सेताला

हे दुर्गे जगदम्ब अम्बिके कल्याणी मम अर्ज सुनोजू तू गायित्री वेद तत्व तू सत चित मयि मन अमल सुनोजू १ नहिं तप जप नहिं ज्ञान ध्यान रत नहिं कछु जाग न अनल हुनोजू नहिं तीरथ व्रत नियम बिबिधि विधि नहिं उपवास न तत्व लुनोजू २ केवल एक नाम कालीअस राखि हृदय मन मगन गुनोजू देवसुवन याचत दिन प्रति तव चरण कमल रज प्रीति चुनोजू ॥ ३॥

९० राग दरबारी कान्हड़ा ताल चौताला

दुर्गेदेवि दुर्गति हरणि अमित सुख की दानि तुम संसार सागर तरणि १ अखिल जग को सृजति पालति प्रलय अद्भुत करनि अति अपार विचित्र तुव गुण जान नहिं कछु बरनि २ बिबुध गण के हृदय अंतर बुद्धि होतु स्फुरणि मातु तव पद सेबि जन को

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

सकल दारिद हरनि ३ राम काम सुधारि पूरणि रा ज्य सकल हरणि नारदादि अनन्त तव गुण कहि सक हिं नहिं बरणि ४ जगत जननी बिपति हननी सदा अशरन शरनि देवसुत को काम पूरण शीघ्र कुरु वर बरणि ॥५॥

ई २ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला के वाली

दुर्गा देवी को आसा गहो नर बौरे रे क्या जग झूठ स्व प्न के माहीं सदा असार सार जेहि नाहीं मोह पास १ निज कराठ लगाये माया जाल माहिं लपटाये नित्य बास बिन धीर न पावत फिरत धुवान से दौरे रे १ जा देवी पद देव समेता देवराज सेवत चित चेता अलय अनीह रूप बिधि ध्याये सकल सिद्धि पदवी को पाये ऐसो चरण कामतरु तजि के क्या धावत पथ और रे २ मन दृढ़ करि हिय ध्यान लगावो छल परपंच सकल बिसरावो रसना रटो नाम को धारे कहो याहि मैं आश निहारे तुम तजि अपर देव नहिं याचो फिरौं नहीं रख जोरे रे ३ जगजननी सुनि ऐसी बानी द्रवहि बेगि क करुणा सी बदानी जन के सर्व दोष बिसराये भरसिता सुगृह नवनिधि लाये देवसुत सुर दुर्लभ जो पद लहत भ क्ति भल तोरे रे ॥४॥

ई ३ राग काफी ताल जल्द तेताला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

श्री काली पद कमल अमल में बसहु भ्रमर मन मेरे १ जाके पद रज सेवि जनन को छूटत शमन दरेरारे २ जग के सुख तम निशि सपना मे सोवत जागु सवेरारे ३ काहे को तुम दुख पावोगे नाहक दुष्ट तरेरारे ४ देव सुवन काली मन रे भजु पैहैसि बिभव घनेरारे ॥ ५ ॥

९३ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

श्री दुर्गा दुर्गा भज मूरख क्या जग जन्म गवांवसिरे दुर्गा नाम हरत दुर्गति को कबहुं न ताहि बिसरावसिरे १ बालापन किय खेल तरुणाई बीते का पछितावसिरे अबहूं पन चौथे महं चेतो अमित भांति सुख पावसिरे २ नहिं जप तप ब्रत नियम होम मख नहिं बिराग उपजावसिरे देव सुवन दुर्गा दुर्गा रटि सुमें खेद कहा वसिरे ॥ ३ ॥

९४ राग काफ़ी ताल जल्द तेताला

जग जननी पद कमल मनाये पाइ कृपा उर अंतर सुरतही सर्व शास्त्र विद नाम कहाये १ जासु नाम महिमा अपार श्रुति परत कलेश नशाये ऐसो नाम धारि रसना पै बिनु श्रम सकल बिभो ग्रह पाये २ काहे को नर पीर उठावत शिर भ्रम भार चढ़ाये क्यों न लेत धन मांगि माय से सकल सिद्धि जसु दास सदा ये ३ शिव सनकादि आदि सुर सुरपति कालिहि सेइ अघाये देव सुवन कालि नाम कामतरु नयन मात्र सुख छाये ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

९५ राग काफी ताल जल्द तेताला

मोको आस तुम्हारि दयानी नहिं जप तप नहिं दान तीर्थ व्रत ज्ञान ध्यान नहिं जानी १ नहिं विराग नहिं योग युक्ति कछु नहिं बिनीत म्दु बानी नहिं मत संग न धर्म कर्म रत नहिं पोषण परप्रानी २ शुद्धि अशुद्धि विवेक न जानो नहिं सज्जन नहिं ज्ञानी केवल नाम कालिका जपिके सकल सिद्धि लहि भै सुख खानी ३ सब शुभ भोग लोग सुत सम्पति विविधि विभव रजधानी देवसुवन बिन साधन सब सुख पायो कृपा भवानी

९६ राग काफी ताल जल्द तेताला

सकल देव सेवन काली पद होत सुख दुख पुंजन भाई शुभ निशुंभ आदि खल गन जत देवन हेसु हतो रणजाई १ रामचंद्र के काज संवारेव बिजय लंक पुर पाई कमल योनि को हरयो प्रथम दुख मधुकैट भहि बधाई २ देवराज जब ऋषि शाप लहि शरण देवि गुहराई सकल छिद्र तन भयो नेत्र शुभ पाय शाप बिनशाई ३ वेद पुराण बखानत गुण को पार दरटत सदाई मोपर होहु प्रसन्न भवानी देवसुवन बलि जाई ।।४।।

९७ राग ईमन ताल जल्द तेताला

मन मेरो काली अनुरागो लोभ मोह रिपु अति अपार है

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तम क्या सोवत किन जागो १ काम क्रोध मद आदि बासना बिबिध भांति के त्यागो नाम अधार राखि उर अंतर सन्त संगति महं लागो २ नहिं धन धाम बाम सुत सम्पति कल्याणी प्रति मांगो रहो मगन निशि बासर मन में खाइ अन्न बरु पागो ३ अष्ट सिद्धि नवनिधि सकल सुख खान पान बरु पागो देव-सुवन सब भवन भरहिंगे कृपा कालिका पागो ॥४॥

६८ राग ईमन ताल जल्द तेताला

जग तारनि तारा पद ध्यायो तारा नाम जपत सनकादिक अजर अमर पद अनुपम पायो १ नारद शिव चतुरानन सेवत सकल सिद्धि मुनि ध्यान लगायो २ नाम प्रसाद पाय अभि बांछित वेद पुराणन्ह प्रगट लखायो ३ विप्र धेनु सुर भूमि भार दुख जब दशकंधर आदि सतायो ४ तारा राम रूप कोशलपुर दशरथ राज किशोर कहायो ५ प्रथम ताड़का हति सुबाहु सह अरु मारीच भगायो ६ गाधि सुवन करि संकट काट्यो ऋषि तिय स्वर्गहिं धाम पठायो ७ भंजि धनुष मानिन्ह मद खंड्यो कीरति बिमल लोक तिहुं छायो ८ देवसुवन जाके गुण गावत कलिकल्मष तन रहन न पायो ॥९॥

६९ राग ईमन ताल जल्द तेताला

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

भवानी तारनी तारा भई सुरहेतु बनबासी हनो खल
वृंद को बन में कियो नरचरित नये स्वामी १ सुजन
सुग्रीव दुख मेटो बँधायो सेतु जलराशी २ बहुरि संग्रा
म करि लंका सकल दशकंधर खल नाशी ३ बहुरि
फिरि आय रजधानी बिबिधि महि धर्म परकाशी ४
कहै सुरसुवन गुण गाये हरत यमराज की फांसी ॥५॥

१०० राग ईमन ताल जल्द तेताला

जगत जननि दानी शिव जाया होहु प्रसन्न भवानि १
आरत की विपदे पवरि महिं माया १ विश्वेशी सब वि-
श्व पालिनी तुमही विश्व उपाया भूमि रूप तुम स-
ब के आश्रय सकल विश्व पर दाया २ जल स्वरूप
रस रूप धातु है सकल भूमि परछाया जलथल बन
गिरि सरि सरितापति सकल बसहिं तव काया ३ मो
ह लोभ रत श्रापि वास तन पापिन्ह घर कहलाया दे
वसुवन लक्ष्मी सुकृतिन्ह घर बसनी पुराणहु गाया ॥४॥

१०१ राग ईमन ताल जल्द तेताला

भजु मन तुलसी नाम सुहाये जो जग माहिं निरन्तर पू
जित ताते जग पूजिता कहाये १ तुलसी वृक्ष सेइ जे जग
में ताके पाप पहार नशाये जेहि आँगन में शोभित
तुलसी ता घर कबहुं दरिद्र न जाये २ जिन्ह बिनु अमित
भांति पूजा न तिकिये विष्णु संतुष्ट न पाये केवल जल

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.
سجن ٣٩١٧

तुलसीदल दीन्हे द्रवत भक्त उर सब सुख छाये ३ जो तुल
सी के बारि अंग निज छीरि देत नर पीअत न वाये देवी
सुवन सो अनघ होत है मानो तीर्थ समस्त नहाये ॥४॥

१०२ राग इमन ताल जल्द तेताला

सुरगण सों सेवित पद जाके १ शंकर शेष शा
रदा अनुकूल कहत महातम विधिवत गाके २ तु
लसी सेइ सकल वांछित फल होत सिद्धि नर कहं
बिनु थाके ३ जा पर करत कृपा करुणा मयि हेत सक
ल सुख जत वसुधा के ४ देवसुवन तुलसी बिनु सेवे मि
लत न कृष्ण भक्ति सुख काके ॥५॥

१०३ राग काफी ताल जल्द तेताला

शैलकुमारी तव गति न्यारी अब सुधि लीजे हे हमा
री नहिं जप तप नहिं ज्ञान ध्यान कछु नहिं तीरथ व्रत
नियम संवारी १ शुद्धि अशुद्धि विवेक न जानो नहिं
जानो श्रुति तत्व तुम्हारी केवल आश्रय नाम के तेरो
हम पांवर तुम तारन वारी २ पतित उधारन नाम ख्यात
जग जो यह सत्य कथित श्रुति चारी तौ सुरनन्दन के
दुख मेटो करुणा सागर प्रभु पियारी ॥३॥

१०४ राग काफी ताल जल्द तेताला

हरु सकल भव ताप संतारनि देवन पालि दनुज द
राउ करि कियो शुभ पंथ जनन हितकारिणि १ दीन

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

दयानी दुरित दारिद्यादुति देति दुरापनिज हित जन पालिनि दुष्ट प्रचंड खलप्रहारिणि सुरसंत सुधारनि जग यश्य कारिनि २ कंज सुचारु चरण मौलि वर सुधाकर धारिणि ग्रग रिपु वाहिनि मागत भक्ति चरण कंज महँ सदा तव देहु सुरसुवन तारिणि ३

१०५ राग वसन्त ताल जल्द तेताला

चेतहु चित कालीचरण कंज आनन्द कन्द मुद मंजु पुंज चपला सुचंद्र दुति चोर चुंचु विधि विविधि चित्र करि सदन संचु अज्ञान घन तम प्रकाश भानु दुखविपिनि दहन समुदित कृशानु १ हरिहर विरंनि हृदय कलित धाम सुर असुर मनुजकृत प्रात प्रणाम भव दुर्ग जलधि कृत सुगम पार बर तरणि वेद विधि विहित सार २ शुचि बरण चारु सुखमा आगार हत दुराचार महिमा अपार अणिमादि सिद्धि नव निधि निदान सुरराज मुकुट मणि अति प्रधान ३ द्विज कुल कमल राज कृ दिवाकर निज गन कुमुद समुदित निशाकर याचत न्टपति कुल देव नन्दन बसत हृदय मम सुताप कंदन ॥४॥

१०६ राग काफी चैत ताल जल्द तेताला

दुर्गादयानी देवी दुर्गा तिहरु मेरी भवानी १ बलि होम मंगल पूजा करि रहो जनपदानी शिवानी २ कर

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

देवा कंचनचुरिआ कुराडल दोनो कानमढ़ानी ३ पि-
र सोनाके छत्र चढ़ैहो गलमुक्ता केहार नयानी ४ कर
जोरिसुतनन्दन जाये निज पद रुचि देहु युभानी ॥५॥

१०७ रागदरबारी ताल झपताल।

श्री कालि कंज सुचारु रुचि शुचि चरण भजु मन
कामदम् कलि कोटि कल्मष भंग करि जग कुंज
मणु विश्रामदम् १ सौभाग्य बहुविधि करण प-
दुतर चित्त ताप प्रणामदम् विधु कोटि किरण तु-
लित नखरुचि सेवि कवि पद प्यारदम् २ बुध वि-
बुध सेवित निगम गीत सुभीत भंजन भावदम्
ब्रह्मादि हृदय सुधाम धृत विज्ञान बर अभिराम
दम ३ कर फलित नन्दय कुल देवनन्दन पठन्ति वि-
नय विराग दम् मम हृदय पंकज बसत निशि दि-
न विमल विदित सुभाग्यदम् ॥४॥

१०८

नीचे प्रकार से अध्याय सब भजना चाहिये अरु पूर्ण
अध्याय का अर्थ खुलासा तौर से यानी अध्याय का
मतलब भाषा किया गया है

भजन संक्षेप दुर्गा राग झंझोटी ताल जल्द तेताल

मार्कराडे मुनि परिडत ज्ञानी - द्विज सो बोले गहरु दुवानी
साव र्णिजोरवि प्रियनन्दन देवीकिया अष्टम मनुचन्दन

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

तिनकी कथा सुनो द्विजमण्डन सुरथ नरेश भयो
खलखण्डन रिपु के प्रबल पराक्रम ताकी चले बि
पिन हय चढ़े एकाकी सो गय मेधा मुनि के आश्रम
पूछेव माया चरित पराक्रम मुनि कहि माया त्रिभुव
न पाली विधि हित जल महं प्रगटे काली हरिहि प्र
बोधि प्रथम विधि पाली मधु कैटभ हनयो हिमबा
ली अ॰ १ देवासुर रण दैत्य पराजित सुर सब गय
विधि सहित सुकाजित हरिहर सो विनयो बहु भांती
केहि विधि रहौं दिवस दिन राती सब सुर कोपि बटोर
तेज बल कमला प्रगट हेतु बध खल दल संग्राम म
हं छेदि असुर दल हरणी सुर को सुखित कीन्ह शुभ करणी
अ॰ २ गरजि कोपि महिषासुर धायो मारि सकल
सुर दल बिचलायो तब कोपी सुर यूथ सयाना कुंभ
सहस भरि मद करि पाना चढ़ि द्वाड़ पद पटकि ध
रणि तल शूल सँभारि खल हनी बीच गल्ल हाहा
करत असुर दल भाजे सुमन वृष्टि करि सुर दल राजे
अ॰ ३ शक्र आदि किय देवी बन्दन। जब देवी करि अ
सुर निकन्दन तुम जग कारिणि पालिनि हारिणि
दैत्य बिदारिणि देव सुधारिणि बरणि प्रताप लहो कि
मि पारा हरिहर आदि सकल सुर हारा यहि विधि
सुनि अस्तुति शुभ भवानी बर दै अंतरहित रुद्राणी पुनि

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

प्रभाव बखानौ महराजा जगदम्बा के कृत सुरकाजा
अ-४ सानुज शुंभ भयो अभिमानी बलसे कीन्ह
सब सुर के हानी शुंभ निशुंभ पराजित सुरगण ग-
य सब मिलि हिमगिरिहित क्षण हरि माया की चरि
त बखानी ताणी हो प्रगटी शिवरानी तिनकी ख-
ल सुनि सुन्दरताई तेहि आवन कहं दूत पठाई च-
ण्ड मुण्ड कहं पुनि खल पठवा आनहु शुंभ गश्री
ल कुल प्रभवा ताकहं उत्तर दीन्ह भवानी कहियो
खल सों यह मम बानी हम प्रण कठिन कौन
मति भोरी जो रण मम सम सो पति मोरी ॥
अ-५ तब धूम्राक्षहि कहा सुरारी आनहु बेगि ता-
हि बहु मारी सो जा कहा गिरा धूमलोचन चल-
नहिं तो करिहौं मद मोचन सुनि खल वचन कोप
करि माया करि तेहि भस्म कीन्ह सुर दाया
अ-६ आयो चण्ड मुण्ड दल साजो भइ प्रचण्ड
काली रण छाजी क्षण महं खंड मुदण्ड दनुज द-
ल खंडि चण्ड पुनि मुण्ड प्रबल खल सुरपा-
लिनि जग तारिणि माता चामुण्डा भइ त्रिभुवन ख्यात
अ-७ चण्ड आदि गण घात निरखि रण आये को-
पि शुंभ बल तन क्षण छादित किये चण्डका
गण को सहित सिंह काली दल जन को ब्रह्मादिक
CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

की शक्ति सयानी करि सुरारि बध हेतु प्रयानी
आयो तहं दूक खल भट मानी राजित रक्तबीज रण
ठानी एक बिन्दु तिहि रक्त पतन से जनित कोटि भ
ट तन समरण से रुधिर प्रभव भट दैत्य चबाई
चामुण्डा पिय रक्त सुखाई रक्त बिहीन असुर
कहं काली पटकि धरणि तल शूलन घाली
अ॰ ८ यह बिचित्र सुनि कथा नरेशू पुनि पूछे मु-
निसे सन्देशू रक्तबीज बध सुनि शुंभासुर सानुज
कहो कस्यो का आतुर कह मुनि शुंभ सबल र-
ण आयो तहं निशुंभ कर शूल चलायो सहित
शूल खल को पर चारि खड्ग छेदि शिर धरणि पछारी
अ॰ ९ निहत निशुंभ निरखि अति कोपा शुंभ सघ-
न शर से दल तोपा करि नभ प्रथम असुर रण भा-
री मुनिगण मन कहं विस्मयकारी देव दनुज कुल
न्तपहि पलनि में हनि उर शूल निपाति धरणि में शुंभ
निपात निरखि सब सुरगण बरषि सुमन हरषित से तन मन
अ॰ १० देवी हत किय सुर आराती बिनय कीन सुर
गण बहु भांती जग कारिणि पालिनि संहारिणि नारा
यणि सब रूप प्रचारिणि यहि बिधि अस्तुति सुनि
शुभवानी देइ बर सुरगण को रुद्राणी जब जब असु
र करहिं सुर हानी तब तब नाश करौं रिपु खानी —

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

अ॰११ यह अस्तुति करि हैं जो मेरी बाधा आमितहेरो
जनकेरी प्रान्ति पाठ यह सदा सुहाई रिपु छय कार
ण मंगल दाई सकल कुव्रत्त परा भव कारक पाठ
न से भूतादिक हारक यह मम चरित सुनै जो कानन
सो जग रहै यथा पंचानन यह कहि दृष्टि अगोचर
माया भइ देखत देवन शिव जाया सा काली सब
जग जन पाली पूजन ते नर दुख गण घाली—
अ॰१२ न्टप यह चरित कहा देवी को इमि प्रभाव
धारति जगती को सुनि के वचन सुरथ न्टप वर मुनि
सहित समीर सू ऊ जपि बहु पुनि निराहार न्टपवै
श्यविजित मन मूर्तिरची महो मय शुभतन धूपदी
प बलि दान विविधि करि निज तन रुधिर दियो सो
हस धरि इहि विधि पूजन पाय भवानी बोली प्रगट
भक्त जन जानी तू वरवैश्य होहु बुध ज्ञानी बहुरि रा
ज्य तव न्टप रिपु हानी यहि विधि द्विज वर पाय न्टप
ति वर होईहै सावर्णि बुध मनु वर जगदम्बा यश भाय
वन्दन कियो धरनि सुर न्टप सुर नन्दन अ॰१३

१॰६ कवित्त

दुर्गाजी प्रसन्न हेतु अस्तुति अनेक ग्रंथ गीत औ क
वित्त वेद बहु विधि प्रमारो हैं आने बहु माने प्रधाने
पै पुराने कविता में बहु देवन कर सेवान विधाने हैं

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

याते छिन कोविद कवीन्द्र धीर सम्पति लहि रची
शुभ गीत यासे देवी गुण गाने हैं देवीजन जीवन
की यंत्र जानि जाहिर करि नृप कुल विख्यात देव
नन्दन बखाने हैं १ बासर गुण अंक चन्द्र युक्त श्री
भसकल दूय मास पौरुष बार मेल बिजया तिथि के
नुके परी है समाप्ति पर बुधजन सो विनय मेरी गो
त दोष पोथि पढ़ै राखै मम सेतु के मुन्शी मनोहर
विविध विद्या विवेक हूर नवल किशोर पास पठये
याही हेतु के मुद्रित करि दिशानि मो करैगे प्रचार
याके गुनगन यथा गान करैं कविजन नित चेतु के २

इतिश्री भजनमालासमाप्तिः

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust.

CC-0. In Public Domain. Funding by IKS-MoE